IJAER/ July-August 2020/Volume-9/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

प्राचीन भारतीय चित्रकला

दीपक बहुगुणा
शोधार्थी इतिहास विभाग.
विनोवा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग झारखण्ड

सार

इस पेपर मे हम प्राचीन भारतीय चित्र कला के बारे में पड़ेगे। श्कलांति ददातीतिश अर्थात मानवीय अनुभूत भावों की सौंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति जो सुख प्रदान करने वाली हो कला है। मानव अनुभूति और कल्पना द्वारा जो बिम्ब मन में अमूर्त सृजित होते हैं वो सांसारिक उपादानों के माध्यम से कला रूप में अभिव्यक्त होते हैं, जिसमें "वसुधैव कुटुम्बकम भावाग्रह सामाजिक रूप धारण कर जीवन को आनन्दमयी व परिपूर्ण बनाते हुए मानव सभ्यता और संस्कृति के उत्तरोत्तर उन्नयन में सृजनरत रहता है। यही विशुद्ध सृजन स्वयं में सत्यनिष्ठ है तथा शिवत्व का भाव समाहित किये होता है, जो कि कलाकार के सौन्दर्यबोध से उभासित होकर कलाकृति में जीवन्त हो उठता है। कालान्तर में भारतीय कला ने प्राग–प्राक कला रूपों को ग्रहण करते हुये राजवंशीय संरक्षण में पोषित सांची, भरहुत, अजन्ता, बाघ, बादामी, ऐलोरा, एलिफेंटा, लघु चित्रण रूपों और बंगाल शैली से निकल कर आधुनिक कालखण्ड तक की विकास यात्रा में नवीन आयामों को स्थापित किया है। यहाँ के कलाकारों ने विषय और संयोजन की दृष्टि से अनेक नवीन प्रयोग चित्रकला और मूर्तिकला में किये और इस प्रयोगवादी धारा के फलस्वरूप ही भारतीय कला ने तात्कालीन परिवेश में जो अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की, वह अजर अमर हो गयी।

कुंजीशब्द : भारतीय , चित्र , कला

प्रस्तावना

वर्तमान युग के मनुष्य का विकास क्रम यह संकेत देता है कि पृथ्वी पर मनुष्य जब सर्वप्रथम चेतना में आया होगा तो वह स्वयं को इस संसार को और ब्रह्माण्ड को समझने के लिए व्याकुल हो गया होगा। और उसी व्याकुलता का शुभ परिणाम वर्तमान युग की सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान एवं विज्ञान है।

भारतीय चित्रकला भी उतनी ही प्राचीन है जितनी मानव की उत्पत्ति का इतिहास। पाषाण युग के मानव को अपने परिवेश की स्मृति को बनाये रखने तथा अपनी विजय के इतिहास को व्यक्त करने की भावना को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से पत्थरों पर और छतों पर अपनी चित्र कृतियों का सृजन किया।

प्रागैतिहासिक काल से वैदिक काल के आरंभ तक भारतीय चित्रकला की क्रमशः उन्नति होती गयी और उत्तर मध्यकाल में अपनी विभिन्न शैलियों में पूर्ण विकसित हो गयी। सैकड़ों वर्ष पूर्व की कुछ

कलाकृतियों के अवशेष आज भी उपलब्ध हैं। इनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय चित्रकार चित्रकारी में कितने निपुण थे और उनके रंग लगाने की विधि कलात्मक थी।

चित्रकला जीवन की अभिव्यक्ति है। जीवन के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श कर उसे सजाने–संवारने का प्रयत्न कला ने किया। लोक–जीवन में ही नहीं, वेद–वेदांग, काव्य कोश सभी में किसी न किसी रूप में चित्रकला अंतर्निहित है। ज्योतिष शास्त्र भी चित्रकला से पूर्णतः प्रभावित है। जब आदिम मानव ने अपने अंतर की अभिव्यक्ति के लिए किसी साधन को चुना होगा तब कला ही उसमें सबसे अधिक संप्रेषणीय तत्व रहा होगा। वेद–वेदांग, काव्य कोश सभी में किसी न किसी रूप में चित्रकला अंतर्निहित है। ज्योतिष शास्त्र भी चित्रकला से पूर्णतः प्रभावित है। जब आदिम मानव ने अपने अंतर की अभिव्यक्ति के लिए किसी साधन को चुना होगा तब कला ही उसमें सबसे अधिक संप्रेषणीय तत्व रहा होगा।

मानव जीवन की भाँति कला के उदय का इतिहास भी बड़ा रहस्यमय, विराट और अज्ञात है। आदिमानव की कलाकृतियाँ उसके जीवन की कोमलतम भावनाओं और संघर्षमय जीवन की सजीव झाकियाँ प्रस्तुत करती है। मानव ने इन चित्रों में रेखाओं और आकारों द्वारा अपनी आत्मा एवं प्रगति को अंकित किया है। साथ ही उसकी इस कलाभिरूचि पर अनूठा प्रकाश पड़ता है।

इन्हीं असंख्य चित्राकृतियों को अवशेषों के आधार पर आज चित्रकला की एक निश्चित परिभाषा निर्धारित हुई। किसी समतल धरातल, जैसे–भित्ति, काष्ठफलक आदि पर रंग तथा रेखाओं की सहायता से लम्बाई, चौड़ाई, गोलाई तथा ऊँचाई को अंकित कर किसी रूप का आभास करना चित्रकला है।

आदिम–काल के मनुष्य हृदय ने किसी भी वस्तु का वही रूप सामने प्रस्तुत किया जो साधारण रूप से उसे दृष्टिगत हुआ। प्रत्येक वस्तु के साथ उसके मस्तिष्क में रहस्य की भावना अवश्य रही। प्रत्येक वस्तु जो आदिम मानव के सम्पर्क में आयी, वह उसे गतिशील दिखाई दी। यह गतिशीलता भी उसकी दृष्टि में पारम्परिक परिपाटी के अनुकूल निश्चयात्मकता पर आधारित थी। इस प्रकार आदि काल के मनुष्य ने प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को शक्ति मानकर, उनको धर्म के आधीन लेकर उन्हें अलौकिक माना। इसी भावना के माध्यम से उसका सामाजिक जीवन भी प्रकाश में आया।

प्रागैतिहासिक चित्रकला की खोज

भारत में प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला की खोज सर्वप्रथम अंग्रेजों ने ही किया था जो यहाँ शासन करने आये थे। "ज्ञात तथ्यों के आधार पर जॉन काकबर्न और आर्चिबाल्ड कार्लाईल को ही सर्वप्रथम शिलाचित्रों की खोज का श्रेय दिया गया है। इन दोनों ने ही 1880 ई0 में कैमूर की पहाड़ियाँ, जो मिर्जापुर के निकट विन्ध्य क्षेत्र में स्थित है, के गुफा चित्रों का परिचय कराया। यहाँ बारहसींगा, साम्भर तथा गैण्डे के शिकार के चित्र प्राप्त हुए हैं। यहीं एक गैण्डे के शिकार का चित्र है जिसमें छरू आदमी भाले से हमला कर रहे हैं।[ष] लोहरी गुफा में शिकार का चित्र तथा लोह फलक का भाला प्राप्त है। 17 मार्च, 1883 ई0 को विजयगढ़ दुर्ग से लगभग तीन मील और सोन नदी से 5 मील दूर घोड़मंगर नामक स्थान पर भी गैण्डे के शिकार का चित्र प्राप्त हुआ।

अधिकतर चित्रित गुफायें मध्य पाषाण काल की हैं। भीम बैठका का महत्व यह है कि यहाँ पर गुफाओं में मानव समुदाय वास्तव में रहते थे तथा उनके द्वारा बनाये व उपयोग में लाये गये औजार व हथियार अपने मूल स्थानों पर ही दबे रह गये। देश में अन्य किसी भाग में संस्कृति का इतना लम्बा अविछिन्न इतिहास अपने मूल स्थान पर सुरक्षित दशा में प्राप्त नहीं हुआ है। और न ही अन्य किसी एक स्थान पर प्रगैतिहासिक मानव के वास्तविक निवास के इतने अधिक स्थल प्राप्त हुए हैं।

अधिकतर चित्र लाल व सफेद रंग के हैं तथा कुछ चित्र हरे व पीले रंगों के भी हैं। ये रंग यहाँ के भूगर्भीय जमाव में पाये गये पदार्थों से बनाये जाते थे। ये रंग पानी या किसी अन्य द्रव्य पदार्थ में धोले जाते थे। हजारों वर्षों में हुई वर्षा, धूप व हवा के कारण काफी चित्र मिट गये हैं परन्तु फिर भी काफी मात्रा में अच्छी दशा के चित्र बच गये हैं। जो कि छतों और दीवारों पर विद्यमान है।

इन चित्रों को चार कालों में बाँटा गया है

- मध्य पाषाण काल–10,000 से 4,000 ई0 पू0 तक
- ताम्र पाषाण काल–4,000 से 2,500 ई०पू०।
- प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल–2,500 से 1,500 ई०पू०।
- उत्तर ऐतिहासिक काल–1,500 से 700 ई०पू०।

अधिकांश चित्र मध्य पाषाण काल के हैं। इनमें हाथी, गेंडा, चीता, भालू, जंगली सूअर, जंगली गाय, बैल, भैंस, नीलगाय साम्भर, हिरन व बन्दर आदि दिखाये गये हैं। मछली, कछुआ व केकड़ा भी चित्रित है। कुछ सामाजिक चित्र भी है जिनमें नृत्य, वेषभूषा, आभूषण, मॉ–बेटा, मद्यपान, शिकार, सामूहिक नृत्य आदि है। बाद के चित्रों में घोड़ों पर जुलूस आदि भी है।

ये शैल चित्रकला की एक विद्या मात्र नहीं बल्कि ये मानवता के विकास का एक निश्चित सोपान प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदि मानव ने न केवल अपने संवेगों को बल्कि रहस्यमय प्रवृत्ति और जंगल के बूंखार प्रवासियों के विरूद्ध अपने अस्तित्व के लिए किये गये संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। ये शैल चित्र इसके साक्षी हैं कि भारत का हृदय मध्य प्रदेश सभ्यता के अभ्युदय के कहीं बहुत पहले सृजनात्मक चेतना से अनुप्राणित था।

भारत में प्रागैतिहासिक चित्रों के प्रमुख स्थान पुरा पाषाण काल है। पुरा पाषाण काल को निम्न काल क्रम में बाँटा गया है

1. पूर्व पुरा पाषाण काल (लोअर पोलियोलिथिक)

   4,00,000 से 1,00,000 ई०पू०।

2. 2 मध्य पुरा पाषाण काल (मिडिल पोलियोलिथिक)

   1,00,000 से 40,000 ई०पू०।

3. उत्तर पुरा पाषाण काल (अपर पोलियोलिथिक)

40,000 से 10,000 ई०पू०।

पूर्व पुरा पाषाण एवं पुरा पाषाण काल में मात्र कुछ पत्थर के औजार मिले हैं। उत्तर पुरा पाषाण काल के भी औजार ही उपलब्ध हैं जो नुकीले तथा धार वाले हैं। ये भीम बैठका की गुफा से प्राप्त हुए हैं। दक्षिण में भी इस काल के अवशेष मिले हैं।

मध्य पाषाण काल (10,000 से 4,000 ई०पू०)

इस काल के अधिकतर चित्र भीम बैठका की गुफाओं में प्राप्त हुए हैं। यहों पर 475 चित्रित गुफायें हैं। जिनमें अधिकतर लाल व सफेद रंग प्रयोग हुआ है तथा हरे व पीले रंग भी कहीं–कहीं उपलब्ध हैं। मध्य पाषाण काल के चित्र भारत में अन्य किसी स्थान पर इतनी प्रचुरता में उपलब्ध नहीं हैं। घोड़े, गाय, बैल, भैंसा, सूअर आदि जानवरों का सुन्दर चित्रण है। यहीं शिकार करते हुए मनुष्य, सामूहिक नृत्य, मद्यपान आदि सामाजिक चित्र भी प्राप्त हुए हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रागैतिहासिक चित्रकला की खोज के अध्ययन के लिए
2. प्राचीन भारतीय चित्र कला के अध्ययन के लिए

साहित्य की समीक्षा

सन् 1899 ई0 में काकबर्न का लेख ष्केव ड्राइंग्स इन दी कैमूर रेंज, नार्थ वैस्ट प्रोविन्सेज", जो जनरल ऑफ दी रॉयल ऐशियाटिक सोसायटीश में प्रकाशित हुआ में उन्होंने मिर्जापुर, चुनार, पभोसा और चित्रकूट सभी जगह के गुफा चित्रों का वर्णन किया है। कैमूर की दक्षिणी, श्रेणी के शिलाश्रयों के चित्रों को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ बताया है। दो चित्र समूह बान्दा जिले में मर्कड़ी और मंझावन स्थानों पर भी प्राप्त हुए।

1907 ई0 में एक आई0सी0एस0 अधिकारी सी0ए0 सिलबेरोंड (C-A- Silberrad) जो चार वर्ष बान्दा में नियुक्त रहे थे उन्होंने सरहत, करियाकुण्ड और करपटिया नामक गांवों के पास शिला चित्रों की खोज की। इनमें बिना पहिये की बैलगाड़ी तथा पैदल चलते हुए घुड़सवार के चित्र उल्लेखनीय है। 1911 ई0 के मिर्जापुर के गजेटियर में सोन नदी की घाटी की चित्रित गुफाओं को सर्वप्राचीन मानव निवास स्थान बताया गया है।

1910 ई0 में सी0 डब्लू० एण्डर्सन द्वारा सिंहनपुर के महत्वपूर्ण शिला चित्रों की खोज हुई जिनमें बहुत सी मानवाकृतियों प्राप्त हुई है।

रायगढ़ क्षेत्र में स्थित कबरा पहाड़ के चित्रों को सर्वप्रथम अमरनाथ दत्त ने 1931 ई0 में अपने अध्ययन ए फ्यू प्रीहिस्टोरिक रैलिक्स एण्ड दी रोंक पेटिंग्स ऑफ सिंहनपुर, रामगढ़ स्टेट सी0 पी0 इण्डिया में प्रकाशित किया।

इसके बाद सन् 1992 में राय साहब मनोरंजन घोष ने जो कि पटना म्यूजियम के क्यूरेटर थे, रायगढ़ से लेकर होशंगाबाद तक फैले हुए क्षेत्र की सामग्री सचित्र रूप में प्रस्तुत की। उनका यह सचित्र अध्ययन मैमावर्स ऑफ आर्कयोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। लेखक ने इसको ष्रॉक पेटिंग्स एण्ड देयर एण्टिक्विटीज ऑफ प्रीहिस्टोरिक एण्ड लेटर टाइम्स का नाम दिया। इसी लेख में सर्वप्रथम होशंगाबाद लिखवनिया, कोहरबार, महररिया तथा विजयगढ़ के चित्र प्रकाशित हुए।

पंचमढ़ी क्षेत्र के चित्रों को प्रकाश में लाने तथा विश्लेषण करने का श्रेय लेपिटनेंट कर्नल डी0 एच0 गॉर्डन को जाता है। इण्डियन आर्ट एण्ड लैटर्सश की दसवीं वाल्यूम में जो 1936 ई0 में छपी, गार्डन का ष्दी रॉक पेटिंग ऑफ महादेव हिल्सश नामक लेख प्रकाशित हुआ इसके साथ 20 फलकों पर 51 रेखा चित्र भी प्रकाश में आये। गार्डन ने 50 छायाचित्र तथा 300 रेखा चित्र भी तैयार करायें।

गॉर्डन ने कबरा पहाड़, महादेव पहाड़ियों और सिंहनपुर की आयताकार मानवाकृतियों में काफी साम्य होने के कारण उन्हें समसामयिक माना है। इन चित्रों का समय 6000 ई0पू0 से 2000 ई0 पूर्व माना जाता है।

ए0 एच0 ब्राट्रिक की "प्रीहिस्टोरिक पेटिंगष 1958 ई0 में प्रकाशित हुई। इसमें तीन प्रसिद्ध चित्र है–(1) सिंहनपुर का आखेट दृश्य, (2) होशंगाबाद का भैंसा और ष्भीम बैटका की गुफाएँ।

30 सितम्बर, सन् 1973 ई0 के धर्मयुग साप्ताहिक में डॉ0 वीरेन्द्र नाथ मिश्र का एक महत्वपूर्ण सचित्र लेख "भीम बैठका की गुफाओं का रहस्यष प्रकाशित हुआ था। जिसमें उन्होंने भोपाल के समीप, जहाँ प्रागैतिहासिक काल में मानव रहा करता था, रंग–बिरंगे चित्रों के माध्यम से लाखों वर्षों का मानव इतिहास उजागर किया है। होशंगाबाद और भोपाल के बीच उवेदुल्लागंज स्टेशन है। उसी के दक्षिण में भीम बैटका की गुफायें है। ये 600 से भी अधिक गुफायें हैं जो 10 किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। इनमें 475 चित्रित है।

श्री वी० एस० वाणकर (विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में पुरातत्व संग्रहालय व उत्खनन के अधीक्षक है) को इस खोज का श्रेय जाता है। यहाँ भारी मात्रा में पुरातात्विक अवशेष मिले हैं। इससे पता चलता है कि भीम बैठका में मनुष्य समूचे प्रागैतिहासिक काल में बराबर रहता रहा है। सर्वप्रथम यहाँ 3,00,000 से 1,00,000 ई0 पू0 के कुछ धार वाले उपकरण प्राप्त हुए हैं जिन्हें उत्तर पुरापाषाण काल का कह सकते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत

माध्यमिक डेटा कई संसाधनों से एकत्र किया जाता है जैसे विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका, और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम, आधिकारिक वेबसाइट

डेटा विश्लेषण

गुफाचित्र– भिमबेटका (म.प्र.)

यह चित्र मध्यप्रदेश के भिमबेटका गुफाओं में है– आदिमानव द्वारा चित्रित किया हुआ, लगभग दस हजार वर्ष पुराना चित्र। इन गुफाओं की खोज हाल ही में हुई है। महाराष्ट्र के पुरातत्व–विद्या के अभ्यासक एवं संशोधक श्री हरिभाऊ वाकणकर ने इन गुफाओं की खोज की। पुरातत्व–विद्या अर्थात पुरातन अवशेषों का अभ्यास। भिमबेटका जैसी गुफाएं पूरे भारत में कई जगहों पर पाई जाती हैं। लेकिन अभ्यासकों ने इन भिमबेटका गुफाओं को अति प्राचीन और अधिक महत्त्वपूर्ण माना है।

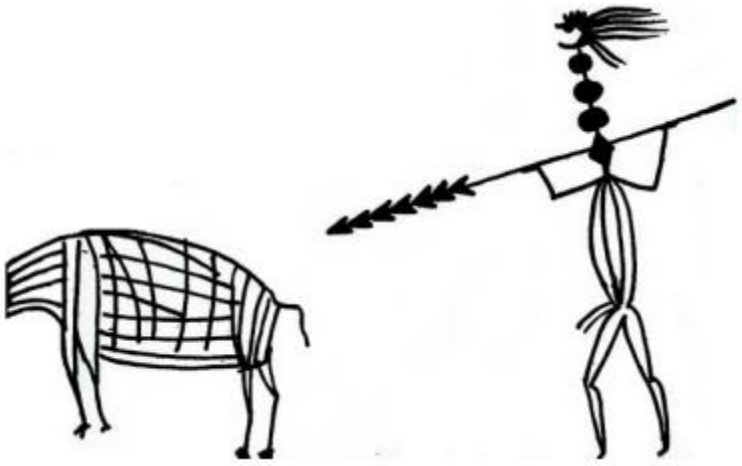

गुपफाचित्र भिमबेटका,

(म.प्र. ;गुपफाचित्र का बनाया हुआ अभ्यास आरेखन)

इन चित्रों को गौर से देखें तो समझ में आता है कि यह केवल दीवारों व छतों पर बनाए हुए चित्रा ही नहीं हैं, बल्कि इन्हें पत्थरों में हल्का–सा तराशा गया है। आदिमानव का जीवन व कैसा था, इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। घने जंगलों में अपनी अन्न, वस्त्रा और निवास की मूल जरूरतों को पूरा करते हुए वह शिकार करता था। उसका सारा जीवन इस शिकार से ही जुड़ा हुआ था। इसलिए उस के गुफाचित्रा भी इसी विषय के हैं। गाय, बैल, सुअर, हिरणµ ऐसे लगभग 452 प्राणी इन गुफाचित्रों में दिखाए गए हैं। कई प्राणियों के पेट में उसके बच्चे भी चित्रित किए गए हैं, मानो जैसे उसका 'एक्स–रे' निकाला हो।

अजंता गुपफाचित्र

मध्यप्रदेश से अब हम चलते हैं महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में। यहां का हरा–भरा खूबसूरत परिसर, पहाड़ों से बहते हुए पानी का संगीत, पंछियों का गुंजन, साथ में फैली हुई सुनहरी धूप। ये हैं अजंता की गुपफाएं और यह उपर दिया हुआ चित्रा इन्हीं गुफाओं का प्रसिद्ध (चित्रा 'पप्रपाणि बोध्सित्व' है। इस चित्रा के बारे में थोड़ा और जान लें तो यह दोबारा या वहां जाकर प्रत्यक्ष रूप से देखते वक्त इसका आनन्द दुगुना हो जाएगा।

अजंता की गुफाओं के इन चित्रों का गुप्तकाल में निर्माण हुआ पहली सदी से छठी सदी के काल में। भिमबेटका के गुफाचित्रा और अजंता के गुफाचित्रा के काल में काफी अन्तर है। कागज, कपड़ा, रंग वाले माध्यम शिल्पकारी के पत्थर या लकड़ी जैसे माध्यम से कम टिकाउफ हैं। समय की गोद में वे जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं। ऐसे ही कुछ इस बीच की कालावधि में हुआ होगा। सिंधु संस्कृति से शुंगकाल तक की शिल्पकला और वास्तुकला के अवशेष मिले हैं। चित्राकारी के ऐसे महत्त्वपूर्ण अवशेष न मिलने के कारण हम सीध गुप्तकाल में आते हैं। अजंता के ये गुफाचित्रा भिमबेटका के गुफाचित्रों की तरह केवल दीवारों पर बनाए हुए नहीं हैं। इन गुफाओं की दीवारों की सतह विशिष्ट प्रकार के प्लास्टर से पोतकर बनाई गई है। इस पुताई की प्रक्रिया में 'प्रेफस्को तंत्रा' और 'टेंपरा तंत्रा' ऐसे दो प्रकार हैं। 'टेंपरा तंत्रा' में सूखी सतह पर चित्रा बनाते हैं और 'प्रेफस्को तंत्रा' में सतह गीली होती है।

अजंता चित्रा के विषय बौद्ध धर्म से संबंध्ति हैं। इनमें प्रमुख विषय है 'जातक कथा' अर्थात् भगवान बुद्ध (के पुनर्जन्म की कथा। इसके अलावा, उस वक्त की दैनंदिन जीवनचर्या, प्राणी, पंछी इत्यादि के कुछ चित्रा देखने को मिलते हैं। ये चित्रा बौद्ध (धर्म से कापफी जुड़े हुए हैं। इसी काल में बौद्ध (धर्म का प्रचार एवं प्रसार पूरे भारत में बड़े पैमाने पर हुआ। यही उसका प्रमुख कारण है। ये निर्मित चित्रा इस प्रचार का ही एक हिस्सा थे। इन चित्रों के लिए प्रावृफतिक रंगों का इस्तेमाल किया गया था। हल्दी से बना पीला रंग, दीए की कालिख से बना काला रंग, पेड़ के पत्तों से बना हरा रंग, लेपिझ लाझुली के पत्थर से बना नीला रंग और मिट्टी के लाल रंग से विविध छटाएं बनाई जाती थीं।

लघुचित्रा शैली

चित्रा की जानकारी में 'लघुचित्रा शैली', यह ठीक पढ़ा आपने! जैसे भित्तिचित्रा– दीवार आकार का, वैसे ही 'लघुचित्रा', अर्थात् छोटे आकार का। सामान्य–तौर पर ऐसे चित्रा कागजों पर बनाए जाते हैं। सामान्य चित्रा की तरह यह तुरंत नहीं बनता। 'लघुचित्रा' बनाने के लिए एक खास किस्म का कागज हाथ से बनाया जाता था। इस पर बारीक रेखाओं से बाहरी आकार बनाकर उसे प्रावृफतिक रंगों से रंगा जाता था। उसपर पिफर बारीकियां दिखाते थे और सबसे आखिर में सुनहरे रंग का लेपन होता था। इसके लिए खरा सोना इस्तेमाल करते थे। चित्रा के सभी रंग एक–दूसरे में घुलमिलकर थोड़ा

सौम्य हो आएं और चित्रा थोड़ा चमकीला लगे, इसके लिए चिकने पत्थर से चित्रा पर घिसाई होती थी। लघुचित्रा का आकार कम–से–कम 8ग10 सेंटीमीटर और अधिक से अधिक 70X50 सेंटीमीटर होता था। आकारों की लयदार बाहरी रेखाएं और सपाट रंग–लेपन, लघुचित्रा शैली की विशिष्टता मानी जाती है। भारतीय चित्राकारों को यह चित्राशैली मुगल चित्राकारों ने सिखाई और मुगलों को पारसी चित्राकारों ने। इससे आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं कि यह परम्परा कितनी पुरानी है और कितनी दूरी तय करके आई है।

मुगल लघुचित्रा शैली

बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेबμये नाम आपने इतिहास में पढ़े होंगे। अकबर की कथाएं, शाहजहां का ताजमहल, शिवाजी महाराज और औरंगजेब की कथाएं प्रसिद्ध हैं। इन्हीं बादशाहों के जमाने में मुगल लघुचित्रा शैली का निर्माण हुआ। यह समय था 15 वीं से 17 वीं सदी का। उस वक्त भारत मुगलों के अधीन था। इन सभी रईस बादशाहों ने कई चित्राकार अपने दरबार में रखे थे। मीर सयद अली, अद्व–अल–साजैद ऐसे मुगल लघुचित्राकारों ने बासवान, मिसकीन, दासवथ जैसे भारतीय चित्राकारों को तैयार किया। आगे चलकर इन्हीं चित्राकारों ने 'दरबारी चित्राकार' के रूप में बहुत उंफचा स्थान प्राप्त किया। मुगल लघुचित्रा के विषय थे राजा का शौर्य और पराक्रम। हमझनामा, अकबरनामा ;अकबर चरित्राद्ध, तुतीनामा ;तोते की कथाएंद्ध, रमझनामा ;महाभारतद्ध जैसे उस जमाने के ग्रंथों की विषय–वस्तु पर भी कापफी चित्रा बनाए गए। साहित्य और चित्राकारी का घना संबंध यहां देखने को मिलता है।

राजपूत लघुचित्रा शैली

'मिथिला' का नाम आपने रामायण में पढ़ा होगा। मिथिला प्रदेश बिहार में है। इसी मिथिला की कला को मधुबनी कहते हैं। इसके मुख्य विषय रामायण पर आधरित होते हैं। मूलतः मधुबनी चित्रा घरों पर बनते हैं। पूजाघर, बैठकखाना ;मेहमान जहां बैठते हैं) और शादी का कमरा ऐसी तीन जगहों पर चित्रा बनाने की परंपरा है। आजकल कागज पर भी चित्रा बनाए जाते हैं। इन चित्रों में भी लोक चित्रा–परंपरा जैसे प्रावृफतिक रंगों का इस्तेमाल होता है। एक और मजे की बात यह है कि रंग सतह पर ठीक से चिपके, इसके लिए इसमें बकरी के दूध और बबूल के पेड़ के चिक का मिश्रण किया जाता है। मिथिला की चित्राकृति में आज भी घरों में बनाई गई कूचियों का ही इस्तेमाल करते हैं। रंग–लेपन और बारीकियां दिखाने का साहित्य उतना विकसित नहीं है। शायद इसीलिए इन चित्रों का ग्रामीण लहजा आज भी कायम है। आजकल इन चित्रों की विदेशों में बड़ी मांग है। इसलिए भारतीय कारीगरों के मेलों और बाजारों में ऐसे चित्रा देखने को मिलते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय चित्राकला की यह लंबी कहानी, कई सदियों का यह सफर, पंचतंत्रा की कथाओं जैसी सरस नहीं है। पर बुद्धि और मन को विस्मित रखने वाली जरूर है। इसकी कई महत्त्वपूर्ण घटनाएं हमने देखीं, पर और कई प्रकार के चित्रा, उसकी कहानियां, शैली के बारे में हम जगह की मर्यादा के कारण यहां बता नहीं सकते। हम गुपफा चित्रों से सीध अजंता चित्रों पर आ गए, और वहां से मुगल लघुशैली तक पहुंचे। अजंता चित्रा शैली के बाद और मुगल लघुशैली से पहले मंदिर भित्ति चित्रों की बहुत बड़ी परंपरा भारत में रही है। आज भी दक्षिण के मंदिरों में और सिक्किम के पॅगोडा मंदिरों में मंदिर–चित्रा दिखाई देते हैं। भारतीय कला इतिहास में लघुचित्रा शैली भी महत्त्वपूर्ण हैं। यह शैली आज भी अस्तित्व में है। आस्था हो तो नजदीकी कला–संग्रहालय में या आस–पास के गांवों में हम इन्हें खोज सकते हैं। क्या पता, ऐसी खोज में आज तक न मिला हुआ चित्रा भी मिल जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

[1] के. खंडलवाला, अजंता की महायान गुफाओं का इतिहास और डेटिंग, महाराष्ट्र पथिक, 2(1), 1990, पीपी. 18 – 21।

[2] ए.पी. जामखेड़कर, अजंता में प्रोफेसर स्पिंक क्रोनोलॉजी पर कुछ प्रतिबिंब, महाराष्ट्र पथिक, 2(3), 1991, पीपी 124–128।

[3] डब्ल्यू.एम. स्पिंक, अजंतारू इतिहास और विकास, स्वर्ण युग का अंत, वॉल्यूम। 1, ओरिएंटल स्टडीज की हैंडबुक, लीडेन, 2005।

[4] वी.वी. मिराशी, हिस्टोरिकल डेटा इन डांडिन्स दासकुमारचरित, एनल्स ऑफ़ द भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, 26, 1945, पीपी. 20–31।

[5] डी. श्लिंगलॉफ, अजंता पेंटिंग में अध्ययन। पहचान और व्याख्या, अजंता प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।

[6] डी. अर्टिओली, ए. कैपन्ना, ए. जियोवोग्नोली, एम. मार्कोन, एम. मारिओटिनी, एम. सिंह, अजंता गुफा की भित्ति चित्रकारी। द्वितीय. निष्पादन तकनीक और संरक्षण की स्थिति का गैर–विनाशकारी जांच और सूक्ष्म विश्लेषण, एआरटी2008, 9वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जेरूसलम, इज़राइल, मई 25–30, 2008।

[7] सी. शिवराममूर्ति, विष्णुधर्मोत्तारा का चित्रसूत्र, कनाल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978।

[8] टी. गणपति शास्त्री, समरगा सूत्रधारा, गायकवाड़ की ओरिएंटल सीरीज, बड़ौदा, नंबर 30 और 32, वॉल्यूम। मैं–द्वितीय, 1924–25।

[9] जी.के. श्रीगोंडेकर, मानसोलासा, गायकवाड़ की ओरिएंटल सीरीज़, बड़ौदा, नंबर 94, वॉल्यूम। द्वितीय, 1939.

[10] ए.के. कुमारस्वामी, चित्रलकिया, सर आशुतोष मेमोरियल वॉल्यूम, पटना, 1926–28, पीपी. 49–61।

[11] पी.ए. मांकंद, अपराजिता पक्का, गायकवाड़ की ओरिएंटल श्रृंखला, बड़ौदा, नंबर 115, 1950।

[12] एम. सिंह, अजंता की गुफा संख्या 2 भित्ति चित्र, वर्तमान विज्ञान, 101(1), 2011, पीपी 89–94 के संरक्षण के संबंध में माइक्रोकलाइमेटिक कंडीशन।